-:अध्याय--२:-

Sahitya Akademi   India International Centre

19 April 2007

meet the author

Manzoor Ahtesham

छायाचित्र:-१

-:मंज़ूर एहतेशाम जी का जीवन-परिचय:-

मंज़ूर एहतेशाम जी के जीवन परिचय देने के लिए हमने इनके जीवन परिचय को दो विभागों में विभाजित किया है जिससे इनका जीवन परिचय पाठक के समक्ष सही रूप में व्याख्यायित किया जा सके:--

विभाग-१:- मंज़ूर एहतेशाम का व्यक्तित्व:-

१.१:- मंज़ूर एहतेशाम की भूमिका।

१.२:- मंज़ूर एहतेशाम का जन्म-वर्ष एवं जन्म-स्थल।

१.३:- मंज़ूर एहतेशाम की पारिवारिक स्थिति।

१.४:- मंज़ूर एहतेशाम की शिक्षा।

१.५:- मंज़ूर एहतेशाम का कार्यक्षेत्र।

१.६:- मंज़ूर एहतेशाम की आप-बीती।

विभाग-२:- मंज़ूर एहतेशाम का कृतित्व:-

२.१:- मंज़ूर एहतेशाम की रचनाएँ।

२.२:- मंज़ूर एहतेशाम के सम्मानित पुरस्कार।

२.३:- मंज़ूर एहतेशाम की रचनाओं का अनुवाद।

२.४:- मंज़ूर एहतेशाम का अन्य क्षेत्रों में कार्य।

२.५:- मंज़ूर एहतेशाम की पुरस्कृत रचनाएँ।

-:विभाग-१:- मंज़ूर एहतेशाम का व्यक्तित्व:-

विभाग :-१.१:-- मंज़ूर एहतेशाम की भूमिका:-

मंज़ूर एहतेशाम जी ने टेलीविजन के एक साक्षात्कार में अपने जीवन का परिचय कुछ इस प्रकार दिया था--

"मजहब के नाम पर बने देश में इंसानों की जिंदगी अंत की ओर बढ़ने लगती है"[1]

"पुराने भोपाल की एक नूर सी सड़क के किनारे बनी एक इमारत में मध्य प्रदेश के एक ऐसे ही मशहूर लेखक रहते हैं-- पद्मश्री से सम्मानित मंज़ूर एहतेशाम। इस लेखक ने मुस्लिम समुदाय की मनोदशा पर, विभाजन के प्रभाव तथा आजाद हिंदुस्तान में मुसलमानों की जिंदगी में हो रहे बदलावों को अपने उपन्यासों एवं कहानियों में बारीकी से उतारा है। 'सूखा बरगद', 'बशारत मंज़िल' जैसे छः प्रसिद्ध उपन्यासों, कई कहानी संग्रह और नाटक के लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी ने प्रियंका दुबे जी से अपनी रचनाओं के साथ-साथ अपनी जिंदगी और लेखन को गहराई तक प्रभावित करने वाले सभी आयामों पर बात करते हुए कहा है कि उनके लेखन की शुरुआत तो घर में आने वाली उर्दू पत्रिकाओं को पढ़ने से हुई। फिर विद्यालय में चार्ल्स डिकेस की 'ओलिवर ट्विस्ट' और 'डेविड कॉपरफिल्ड' से परिचय हुआ। पढ़ने में रुचि तो थी पर साहित्य से मेरा असली परिचय मेरे एक दूर के रिश्तेदार नफीस भाई ने कराया। जब छोटा था तब एक दफे वो कराची से भोपाल आए और उन्होंने मुझे दोस्तोवस्कि की 'ब्रदर्सकारमाजोव' तोहफे में दी। बस वहीं से पढ़ने- लिखने का सिलसिला शुरू हो गया पर मैंने क्लासिकल के साथ साथ पॉपुलर फिक्शन भी खूब पढ़ा तभी इंजीनियरिंग में दाखिला हो गया। मैं कॉलेज में भी एक पत्रिका निकालने लगा। फिर मन नहीं लगा तो अंतिम वर्ष में मैंने पढ़ाई छोड़ दी और एक दोस्त की दवाइयों की दुकान पर बैठने लगा। वहाँ भी मैं लिखता रहता था। उसके कुछ दिनों बाद मेरा प्रिय दोस्त सत्येन मुझे मिला और उनके जरिए मेरा और भी कई लेखकों से परिचय हुआ तभी मेरी पहली कहानी 'रमजान में मौत' प्रकाशित हुई। इस तरह मेरा जो पढ़ने-लिखने का सफर शुरू हुआ...... वो आज तक जारी है। मैं हमेशा आम आदमी की भाषा में लिखकर मास तक पहुंचना चाहता था। इसलिए मैंने हिंदी को चुना। जहाँ तक हिंदी लेखन की चुनौतियों की बात है तो पैसे के हिसाब से आज भी हिंदी लेखकों के पास कुछ नहीं है। इसके पीछे मुख्य वजह है प्रकाशन की बेईमानी। आज भी हिंदी लेखकों को रॉयल्टी नहीं मिलती और ना ही उनकी पुस्तकें पाठकों तक पहुँच पाती है।"[2]

मंज़ूर एहतेशाम जी के व्यक्तित्व के संदर्भ में इनके स्वभाव का परिचय ७ फरवरी २०१६ से २० फरवरी २०१६ तक मिलकर तथा इनसे साक्षात्कार करके यह ज्ञात हुआ कि वह एक सामाजिक व्यक्ति है इनका यह सामाजिक व्यक्तित्व इनके साहित्य में भी हमें देखने को मिल जाता है। इनसे बात करने पर यह पता चला कि इनके परिवार की परिस्थितियाँ कैसी हैं तथा इनके परिवार में कितने सदस्य हैं एवं वह क्या-क्या व्यवसाय करते हैं।

एहतेशाम जी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल-सहज एवं सामान्य-सा रहा है। इनका समाज के प्रति जो दृष्टिकोण से में नजर आता है यह है कि समाज में व्याप्त ऐसे छोटे-छोटे पहलू जो कि सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य से अत्यंत दयनीय और जीर्ण-शीर्ण स्थिति में व्याप्त है। इस दयनीय स्थिति को इन्होंने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के उस कुनबे को एक पिरामिड में पिरोने का प्रयास किया है जिससे लोगों में जागरूकता आ सके।

मंज़ूर जी के साक्षात्कार से मुझे इनके व्यक्तित्व की एक अनूठी दास्तान दिखाई दी कि इनका रहन-सहन कैसा था? इनकी पारिवारिक स्थिति कैसी थी? इनकी शिक्षा दीक्षा कैसे हुई? मुझे इन सभी तथ्यों की संपूर्ण जानकारी इस साक्षात्कार से प्राप्त हुई। मंज़ूर एहतेशाम जी अपने कार्य क्षेत्र में बहुत बड़े व्यापारी भी है तथा इनका रुझान रचनाओं अथवा साहित्य में देखा जाए तो ये अभी भी रचनाएँ लिख रहे हैं। जिनमें ये अपनी आप-बीती को समाहित करते चले आ रहे हैं। इनके लेखन का एक-तिहाई हिस्सा आत्म-कथानक है। इन्होंने अपने व्यवसायिक जीवन को जीते हुए अपनी रचनाएँ रची है। चाहे वह इनके मित्र का दवा विक्रय करने का स्थल हो या इनके अपने व्यवसाय (इंटीरियर डेकोर एवं फर्नीचर) का दफ्तर। इनमें यह भी प्रतिभा देखी गई है कि यह अपने अन्य कार्यों एवं व्यवसाय के साथ-साथ अपनी रचनाओं को भी समय देते आ रहे हैं।

"मंज़ूर एहतेशाम जी वर्तमान समय के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। इनकी रचनाएँ किसी चमत्कार के लिए किसी अन्य तथ्य पर निर्भर नही दिखतीं बल्कि वे अनेक अंतर्विरोध और त्रासदीयों के बावजूद चमत्कार की तरह बचे जीवन का आख्यान रचती हैं।"[3]

हिंदी साहित्य में मंज़ूर एहतेशाम जी का नाम प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित रचनाओं में लिखा जाता है। साहित्य की अलग-अलग विधाओं में इनका रचना कौशल, इनकी चिंतन शक्ति अनुभूति के रूप में सामने आ चुकी है। अपने विभिन्न प्रकार के उपन्यास, नाटकों, कहानियों आदि के माध्यम से वे साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं।

मंज़ूर एहतेशाम जी समकालीन कथा साहित्य के एक ऐसे प्रगतिशील संवेदनशील और सामाजिक चिंतन से संपन्न लेखक है जिन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा भारतीय समाज की वास्तविकता एवं उसके यथार्थ को मुख्य रूप से मुस्लिम- समाज के चित्र के माध्यम से उजागर किया है।

बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न हो मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपने साहित्य में उन्हीं चीजों पर रखा है जिसको इन्होंने देखा, परखा या सहा है। इन्होंने वर्तमान परिस्थितियों के साथ चलना सीखा है तथा ये नई शिक्षा एवं प्राद्योगिकी का प्रयोग एवं समर्थन भी करते हैं। ये महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए हैं तथा इन्होंने उनकी विचारधारा को अपनाया भी है। गांधी जी के भारत देश के लिए योगदानों एवं उनके द्वारा किए गए आंदोलनों के प्रति इनका बहुत रुझान रहा है और इन्होंने गांधीजी के अस्पृश्यता के दृष्टिकोण को भी पूर्ण रूप से अपनाया है।

एहतेशाम जी आत्मकथा लिखने में विश्वास नहीं रखते यह अपने अनुभवों को रचनाओं में समाहित करने का प्रयास करते हैं इनकी रूचि के संबंध में कहा जाए तो इनकी रूचि टेबल टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट आदि खेलों में रही है इन्होंने कभी नहीं सोचा था कि ये इस क्षेत्र में आएंगे परंतु इन्हें कथा एवं साहित्य पढ़ना बहुत अच्छा लगता था इसी रुचि की वजह से इन्होंने इस क्षेत्र की तरफ अपने कदमों को गतिमान किया। इस रुचि के साथ-साथ इनकी कई प्रकार की रुचियां है जैसे-- इन्हें फिल्म टिकट जमा करना, विदेशी मुद्रा जमा करना, पत्र लिखना एवं हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में पढ़ना बहुत अच्छा लगता है परंतु कविताओं की रचना करने में इनकी कोई रुचि नहीं है।

इसके अलावा मंज़ूर एहतेशाम जी के व्यक्तित्व के विषय में और अधिक गहराई से जानना है तो इनकी रचनाओं से ज्यादा सही, सीधा और सरल रास्ता और कोई नहीं है। स्वयं मंज़ूर जी का कहना है कि इनका लेखन इनके अनुभवों की ही एक पृष्ठभूमि है। जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता के बाद के बदलते परिवेश एवं उसमें उत्पन्न समस्याओं को बड़ी ही संजीदगी से उभारा है।

विभाग :-१.२:-- मंज़ूर एहतेशाम का जन्म-वर्ष एवं जन्म स्थल:-

बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार मंज़ूर एहतेशाम जी का जन्म 3 अप्रैल सन् 1948 ई. भोपाल मध्य प्रदेश में हुआ था। घर की आर्थिक स्थिति मजबूत ना होने के कारण इन्होंने अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई बीच में ही अधूरी छोड़ दी तथा उसके पश्चात यह दवाइयों की दुकान पर दवाइयों को बेचने का कार्य करने लगे फिर कुछ महीनों के बाद यह अपने पिताजी के व्यवसाय में जुट गए। इनकी मातृ-भाषा का प्रभाव स्पष्तः इनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। इन्होंने अपनी अधिकतम रचनाएँ अपने जन्म स्थल राज्य भोपाल में ही अपने मित्र की एक दवाई की दुकान पर बैठकर लिखी हैं। इनके जन्म की स्थिति वह स्थिति थी जब हमारे भारत देश को आजाद हुए एक वर्ष ही हुआ थ। जब इनका जन्म हुआ तब तक हिंदू-मुस्लिम विरोध की वजह से हमारा देश दो भागों में बंट चुका था और उस समय कई हिंदू- मुस्लिम भाइयों को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। जो कि उस समय की दयनीय अवस्था मानी जाती रही है। इनका जन्म एक ऐसे मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था जो कि उस समय अर्थात् विभाजन के समय की समस्याओं से जूझ रहा था। इनके पिताजी लकड़ी का व्यवसाय करते थे। लकड़ियों को काटकर उनसे फर्नीचर तैयार करना तथा उस तैयार फर्नीचर को बाजार में ले जाकर बेचना ही उनके पिताजी की जीविका अर्जन का साधन था जिससे इनके परिवार का भरण-पोषण होता था।

एहतेशाम जी के जन्म-स्थल के संदर्भ में कहे तो ये सन् २००१ ई. से सन् २००५ ई. तक 'निराला सृजन पीठ' भोपाल के अध्यक्ष रहे हैं एवं वर्तमान काल में ये अपने देश के लिए त्याग प्रेम और देशभक्ति की भावना को लेकर अपना जीवन अपने पूरे परिवार सहित अपने भारत देश के ही राज्य मध्य-प्रदेश की राजधानी भोपाल जोकि इनकी जन्म- भूमि है वहीं पर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं और पिछले भी लगभग तीस वर्षों से फर्नीचर एवं इंटीरियर डेकोर का व्यवसाय कर रहे हैं। इनका यह व्यवसाय भोपाल में 'कारखाना' नाम से सुप्रसिद्ध है। इन्हें साहित्य के प्रति बहुत अधिक लगाव है जिसे वे अपने व्यवसाय के साथ-साथ चलायमान रखते हैं। ये अपने फर्नीचर एवं इंटीरियर के व्यवसाय के कार्यों को करवाने के लिए लखनऊ से लोगों को भोपाल बुलवाते हैं। ये अपनी मातृ-भूमि के प्रति बहुत अधिक प्रेम व सद्भाव रखते हैं जो कि इनके लिए सर्वोपरि है।

इस आधार पर हमें यह प्रतीत होता है कि मंज़ूर एहतेशाम जी अपने जन्म से ही अपनी मातृ-भूमि से बहुत अधिक सद्भाव रखते हैं जिन पर विभाजन का भी प्रभाव उनकी देशभक्ति एवं जन्म- भूमि के सद्भाव पर ना पड़ सका और एहतेशाम जी के परिवार ने विभाजन के पश्चात् भी अपने देश को ही अपना निवास स्थान चुना जो कि उनकी मातृ-भूमि थी और रहेगी। इसका प्रभाव एहतेशाम जी के जीवन पर उनकी रचनाओं में एवं परिवार के सदस्यों पर परिलक्षित होता है।

विभाग :-१.३:-- मंज़ूर एहतेशाम की पारिवारिक स्थिति:--

सुप्रसिद्ध रचनाकार मंज़ूर एहतेशाम जी ने जिस परिवार में जन्म लिया था वह एक मध्यमवर्गीय परिवार था। इनके जन्म के दौरान जो स्थिति भारत के निवासियों की थी वह स्थिति भारत के नागरिकों की आर्थिक दशा बिगड़ चुकी थी। इनके जन्म के समय में विभाजन का दौर चल रहा था। जिस परिस्थिति में सभी नागरिक असहज जीवन व्यतीत कर रहे थे। विभाजन के कारण लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास कर रहे थे और कई लोगों को शरणार्थी जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था। इसी विभाजन के दौर में मंज़ूर एहतेशाम जी का परिवार भी सफर कर रहा था।

भारत देश के विभाजन से पूर्व आर्थिक स्थिति दो कमजोर थी ही विभाजन के पश्चात् और कमजोर हो गई थी और आगे चलकर इनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ना होने के कारण आरती श्याम जी ने अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई अधूरी ही छोड़ दी इन्होंने अपने परिवार की स्थिति को देखते हुए अपना मन आर्थिक क्षेत्र की ओर कर लिया और अपने एक मित्र की दवाइयों की दुकान पर दवा बेचने का कार्य आरंभ कर दिया और इसके साथ-साथ यह अपनी रचनाएँ भी लगातार दवाइयों की पर्चियों पर लिखते एवं प्रकाशित करवाते रहें। इनका कहना है कि मेरे अधिकांश उपन्यास मेडिकल स्टोर पर लिखे गए हैं जो की दवा बेचते समय दवा की पर्ची ऊपर ये लिखा करते थे इनके सभी उपन्यास बहुत ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हैं जिसका पाठक विभाजन के मर्म को साक्षात् रुप में महसूस कर सकता है।

" मंज़ूर एहतेशाम जी के दादाजी उत्तर पश्चिम सीमा- प्रांत से सन् १८६० ई. में भोपाल आए थे जिससे यह पता चलता है कि मंज़ूर एहतेशाम जी की पाँच पीढ़ियों का निवास स्थाल भोपाल प्रदेश है। इनके दादा जी की पेशे से बोली जाने वाली भाषा का आधार अरबी और फारसी था। परंतु इनके पिताजी उर्दू बोला करते थे और ये भी उर्दू बोला करते हैं परंतु यह उर्दू के साथ- साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी रखते हैं तथा इन की संताने भी हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में कुशल है।"[4]

मंज़ूर एहतेशाम जी के अब्बा का नाम अब्दुल ग़फूर खान था तथा इनकी अम्मी जी का नाम अम्तुल अजीज़ था जो कि चारों बेटों-बेटियों में से इनको बहुत अधिक प्रेम करती थीं और ये अपनी अम्मी को 'अबी' बुलाते थे। इनके दो बड़े भाई और एक बड़ी बहन हैं। जिनमें से बड़े भाई का नाम अब्दुल राव छोटे भाई का नाम एजाज़ एवं बड़ी बहन का नाम सगीरा है। इनके पिता जी ने अरबी शिक्षा हासिल की थी और इन्होंने एक बड़े 'मौलवी आलिम फ़ज़ल' की उपाधि भी प्राप्त की थी।

इनके पिताजी को धर्म के नाम पर रोटी कमाना वाजिब नहीं लगता था इसलिए इनके पिताजी ने लकड़ी का व्यवसाय करना सुनिश्चित किया तथा इनके बड़े भाई ने अब्बू का हाथ बटाया एवं इनके बड़े भाई इसी व्यवसाय में लगे रहे। परंतु उनके छोटे भाई एजाज़ ने पेंटिंग तथा आर्किटेक्चर का कार्य किया और सन् १९९० ई. में 'कारवां' नाम से भोपाल से दो किलोमीटर दूरी पर इस व्यवसाय को करना आरंभ किया तथा बड़ी बहन की शादी रिश्तेदारी में ही तायाजाद के लड़के से कर दी गई।

मंज़ूर एहतेशाम जी का विवाह सन् १९७४ ई. में सरवर जी के साथ संपन्न हुआ। जिन्होंने अपनी जीवन शैली में स्नातकोत्तर विज्ञान विषय की उपाधि प्राप्त की उसके साथ-साथ शिक्षा में स्नातक अर्थात बी. एड. की उपाधि भी प्राप्त की। इनका निधन सन् २०२० ई. में कोरोना काल की अवधि में कोरोना से हो गया। इनकी दो पुत्रियां है जिनमे से एक का नाम सदफ और दूसरी का नाम समर है। इनकी दोनों संताने इनकी तरह ही कुशल और अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सर्वगुणीं हैं।

"एहतेशाम जी को प्रबुद्ध दृष्टि के साथ-साथ चलना अत्यधिक पसंद है और इसी के आधार पर इन्होंने अपने बच्चों को आधुनिक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय से शिक्षा दिलवाई यह सोच कर कि आधुनिक युग से इनकी संताने ने अछूती ना रह जाए एवं इस युग के प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम बना सकें। जिस आधार पर इनकी पुत्री समर ने अपने जीवन में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शिक्षा में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् ये अब मिलिट्री विद्यालय में अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। इनकी दूसरी पुत्री सदफ अभी आविवाहिता हैं। इन्होंने अपने शिक्षा क्षेत्र में आर्किटेक्चर शिक्षा की उपाधि प्राप्त की है तथा वर्तमान में ये अपने पिताजी की तरह ही इंटीरियर डेकोरेटर का खुद का व्यवसाय कर रही हैं तथा ये व्यवसाय में अपने पिताजी का भी हाथ बटाती है।"[5]

मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपनी दोनों संतानों के उज्जवल भविष्य का निर्माण किया है। ये अपनी बड़ी पुत्री समर का विवाह शकीब जी से करवा चुके हैं। शकीब जी देश की सेवा में कार्यरत हैं। ये वर्तमान समय में नासिक में 'लेफ्टिनेंट कर्नल' के पद पर रहकर भारत देश की सेवा कर रहे हैं। इनकी पुत्री की दो संताने है जिनमें से एक पुत्र और दूसरी पुत्री है। जिनका जीवन खुशियों सहित व्यतीत हो रहा है।

इस आधार पर यह प्रतीत होता है कि एहतेशाम जी अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बहुत अच्छे से निभाते चले आ रहे हैं तथा एक आदर्श पुत्र होने के साथ-साथ एक आदर्श पति और पिता के जो कर्तव्य होते हैं उन्हें भी सफलतापूर्वक निभा रहे हैं।

"-:मंज़ूर एहतेशाम जी के परिवार का प्रारूप:-"[6]

छायाचित्र आकृति:-२

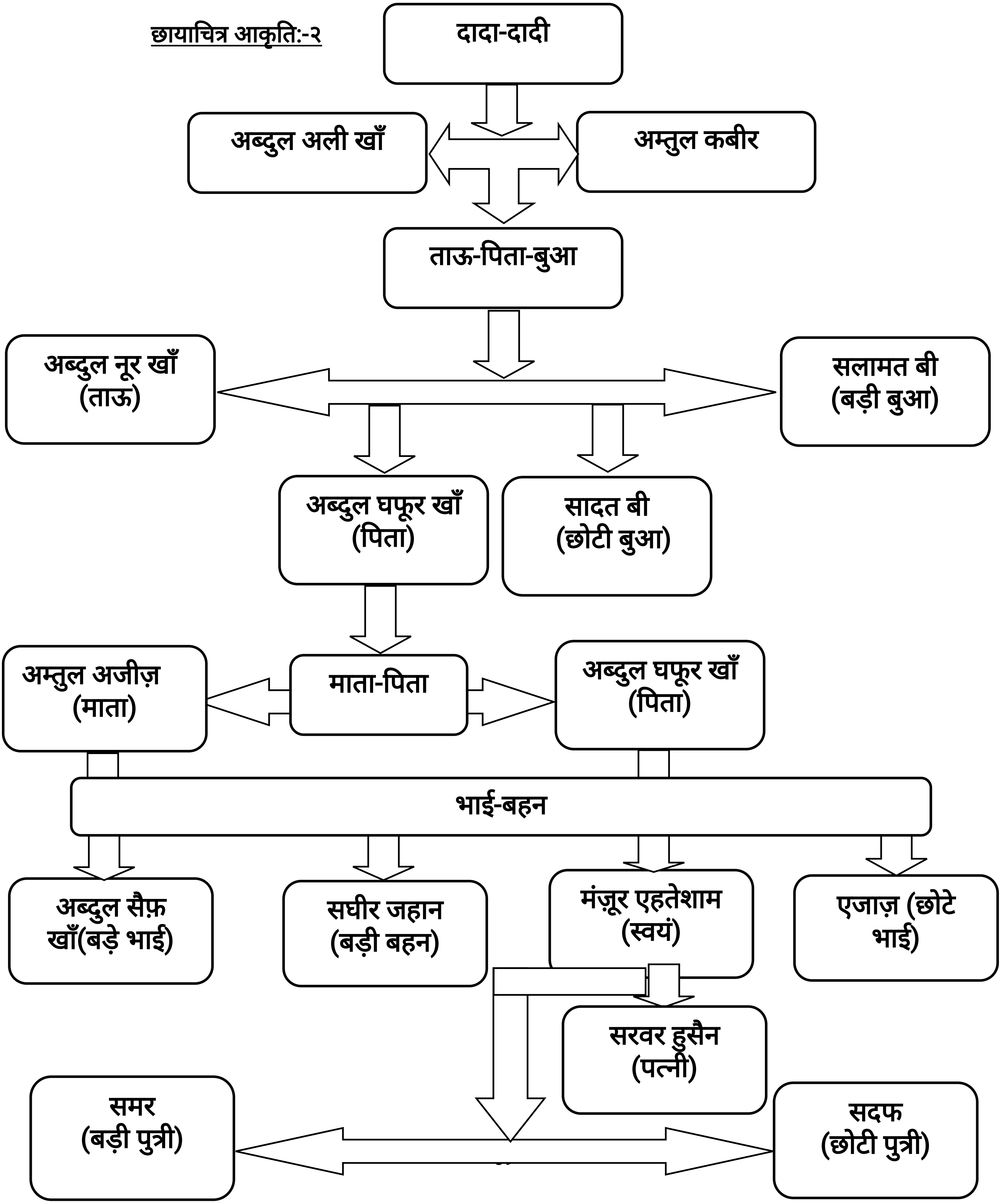

विभाग :-१.४:-- मंज़ूर एहतेशाम की शिक्षा:--

मंज़ूर एहतेशाम जी की शिक्षा का आंकलन किया जाए तो यह पता लगता है कि इन्होंने कितने संघर्षों के साथ अपनी शिक्षा हासिल की। जैसा कि एक मध्यम वर्गीय परिवार के लिए अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करना कठिन होता है उसी प्रकार उनकी शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग में कई कठिनाइयाँ आईं तथा इनके पिताजी का लकड़ी का व्यवसाय होने के कारण इनके पिताजी का अपने परिवार के लिए अधिक धन अर्जित कर पाना कठिन था। जिसकी वजह से एहतेशाम जी ने अपनी शिक्षा को अधूरा छोड़ कर रोजगार प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो गए तथा अपने एक मित्र की दवाइयों की दुकान पर दवा बेचने का कार्य करने लगे। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि इन्होंने बिल्कुल भी शिक्षा प्राप्त नहीं की यह स्कूली शिक्षा में दसवीं कक्षा तक एक ऐसे छात्र थे जिन्हें होनहार छात्रों में गिना जाता था।

"एहतेशाम जी ने जब दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की उसके पश्चात् किसी व्यक्ति के गलत मार्ग दर्शन से इन्होंने ग्यारहवीं कक्षा की शिक्षा विज्ञान विषय से ग्रहण की जिसमें इनकी बिल्कुल रुचि नही थी। इंटर की शिक्षा विज्ञान विषय से पूर्ण करने के पश्चात् ये भोपाल से बाहर किसी अन्य राज्य में अपनी अग्रिम शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे। तो इन्होंने अलीगढ़ जाकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया परंतु एक वर्ष के पश्चात् ही इनका वहाँ के कुलपति से मन-मुटाव हो गया और वहाँ मन-मुटाव होने के कारण इन्होंने वहाँ से भी पढ़ाई छोड़ दी और वापस भोपाल आ गए। फिर इन्होंने भोपाल के मौलाना आजाद कॉलेज में प्रवेश लिया और यहाँ चार वर्षीय स्नातक की उपाधि लेने के पश्चात् पांचवें वर्ष में फिर से पढ़ाई छोड़ दी और पढ़ाई छोड़ने के पश्चात् ये व्यवसाय में जैसा कि ऊपर बताया की इन्होंने दवाइयाँ बेची फिर इन्होंने अपने पिता जी वाला व्यवसाय करने की सोच बना ली और वही व्यवसाय करना आरम्भ कर दिया। अब ये लगभग तीस वर्षों से फर्नीचर तथा इंटीरियर डेकोरेटर का खुद का व्यवसाय कर रहे हैं। जो कि भोपाल में 'कारखाने के नाम से सुप्रसिद्ध है।"[7]

विभाग :-१.५:-- मंज़ूर एहतेशाम का कार्यक्षेत्र:--

<u>छायाचित्र:-३</u>

मंज़ूर एहतेशाम जी की शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् उनका कार्यक्षेत्र देखा जाए तो उनका जीवन-यापन एक एक लकड़ी के व्यवसाय से चल रहा है। इन्होंने पहले दवाइयाँ बेची फिर अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए अपने पिताजी वाला व्यवसाय करना आरम्भ कर दिया जो व्यवसाय इनके पिता और इनके बड़े भाई कई वर्षों से करते चले आ रहे थे। उसी व्यवसाय को इन्होंने भी आगे बढ़ाया और इस व्यवसाय को और गति प्रदान करने के लिए इन्होंने 'कारखाना' नाम से भोपाल मे ही एक शो-रूम स्थापित किया हुआ है जो कि ई-१ शिवाजी नगर भोपाल-४६२००१६ इस पते पर है तथा इनका निवास स्थान 'शिल्पकार हाउस', ग्रांड होटल के सामने, भारत टाकेज चौराहा, भोपाल-४६२००११ कारखाने से कुछ ही दूरी पर है। फर्नीचर के व्यवसाय के साथ-साथ ये इंटीरियर डेकोर का भी व्यवसाय करते हैं। जिसमें इनकी छोटी पुत्री भी इनको सहयोग देती है।

स्कूली शिक्षा के दौरान ही इनका लेखन के प्रति झुकाव रहा है। ये साहित्य के प्रति कितने समर्पित हैं। यह उनके इस कथन से ही परिचित होता है कि-- "साहित्यकार की प्रतिबद्धता और पक्षधरता साहित्य के प्रति होनी चाहिए ना कि व्यक्ति विशेष के प्रति ।"[8] इनका मानना है कि लेखन को विचारधारा के दबाव में नही आना चाहिए। जाने-अनजाने विचारधारा लेखन को प्रभावित तो करती है परन्तु कोशिश यह की जानी चाहिए कि रचना का समय के साथ समन्वय स्थापित हो सके क्योंकि विचार शाश्वत नही होते उनमें परिवर्तन होता रहता है।

एहतेशाम जी बचपन से ही लेखन में रुचि तो रखते ही थे परंतु इनकी ज़िन्दगी से जुड़ा हर एक पहलू इन्हें लेखन के लिए प्रेरित करता रहा है। जब इनकी उम्र दस-बारह वर्ष के एक सामान्य बालक की थी तब इनके अंदर सफल एवं कारगर लेखक की बुनियाद रखने वाले इनके आदर्श इनके ही रिश्तेदारी के तायाजाद भाई थे। जो की मन्नान साहब के नाम से जाने जाते थे। ये इनके परिवार के बहुत ही करीबी सदस्य थे और इनके साथ-साथ कई लोगों ने इनकी हौसला अफ़जाई की जिनमे से इनकी एक स्कूली अध्यापिका धनवंती मिश्रा जी थी। जो की इनकी रचनाओं को प्रोत्साहन देती थीं तथा इनको और रचनाएँ रचने के लिए प्रेरित भी किया करती थीं एवं इनके परिवार में इनके बड़े भाई नफ़ीस साहब जी भी इनके हौसले को और बुलंद किया करते थे और खूब मन लगाकर रचनाएँ लिखने के लिए प्रेरित किया करते थे। इन सबसे इनका हौसला कथा-साहित्य की रचनाएँ करने मे और बुलंद होता चला गया।

इन सबसे तो वैसे ही मंज़ूर जी के अंदर साहित्य सृजन की चिंगारी जल चुकी थी परन्तु इस चिंगारी को आग बनाने का कार्य इनके परम मित्र सत्येन जी ने कर दिया और सत्येन जी ने इनकी साहित्य के प्रति रुचि और लगाव को देख कर इनको और प्रोत्साहन दिया। तत्पश्चात् इन्होंने अपनी कई रचनाओं को प्रकाशित रूप प्रदान किया।

एहतेशाम जी वैसे तो बचपन से ही रचनाएँ किया करते थे परंतु सही मायने में इनकी पहली रचना ने सन् १९७३ ई. में 'रमजान में मौत' कहानी संग्रह के रूप में हिंदी साहित्य के जगत में कदम रखा था। इसके पश्चात् इन्होंने अन्य कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की जिसमें से इनका प्रथम उपन्यास 'कुछ दिन और' जो कि सन् १९७६ ई. में प्रकाशित हुआ। इसके बाद इनका सुप्रसिद्ध उपन्यास 'सूखा बरगद' सन् १९८६ ई. में प्रकाशित हुआ जो कि भारत-विभाजन की हृदय-विदारक स्थिति को दर्शाता है। फिर इनका अगला उपन्यास सन् १९९५ ई. में 'दास्तान-ए-लापता' प्रकाशित हुआ। इन सबके बाद इनके कहानी संग्रह 'तसबीह', 'तमाशा' आदि प्रकाशित हुए और कुछ उपन्यास भी जैसे-- 'बशारत मंज़िल','पहर ढलते' अंतिम उपन्यास 'मदरसा' सन् २०११ ई. में प्रकाशित हुआ।

मंज़ूर एहतेशाम जी उन सभी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करते रहते हैं जिन्होंने इनको प्रेरणा दी एवं साहित्य की ओर अग्रसर किया जिनकी वजह से इन्होंने इतनी रचनाओं का सृजन किया और जब भी इन्हें समय मिलता है तो सबको सप्रेम-तहे दिल से स्मरण भी करते हैं।

विभाग :-१.६:-- मंज़ूर एहतेशाम की आपबीती:--

मंज़ूर एहतेशाम जी ऐसी परिस्थिति में जन्मे जो स्थिति बहुत ही दयनीय थी। भारत विभाजन की परिस्थिति इनसे अछूती नहीं रही है क्योंकि इनका जन्म विभाजन के एक वर्ष के पश्चात् ही हुआ था। इसी वजह से ये अपनी रचनाओं में उन्हीं चीजों का वर्णन करते हैं जो इन्होंने देखा, परखा और सहा था। अर्थात् यह भी कहना अनुचित नहीं होगा कि जो उन पर बीता है उसी का इन्होंने अपनी रचनाओं में वर्णन किया है ऐसे श्याम जी का यह कहना है कि--

"मेरा अधिकतम सृजन अपने इर्द-गिर्द अपनी जिंदगी में देखा-परखा समझा और खुद पर बीते अनुभव पर केंद्रित रहा है जो भी लिखा वह आत्मकथात्मक श्रजन ही किया है।"[9]

इनका कहना यह भी है कि--

" लेखन को अपने जीवन से अलग ना समझें क्योंकि जो भी महत्वपूर्ण चीज मेरी कलम पर आती है वह जीवन से निकलकर ही आती है।"[10]

उदाहरणार्थ:-- वो चाहे इनकी रचना 'सूखा बरगद' हो या 'दास्तान-ए-लापता' अर्थात् इन रचनाओं का जो मुख्य आधार है वह क्रमशः विभाजन के समय की समस्या एवं भोपाल गैस त्रासदी को पात्र जेड. ए. खान के माध्यम से अपनी आप-बीती को बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत करते गए हैं। इन्होंने अपने कथा साहित्य में अपनी परिस्थितियों के मर्म को समाहित करने का प्रयास किया है।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है की मंज़ूर एहतेशाम जी ने हर प्रकार से खुद पर बीती हुई परिस्थितियों को ही रचनाओं में समाहित किया है जिसके आधार पर इनकी रचनाएँ एक जीवंत शैली में पहुँच कर पाठक को उस परिस्थिति का बोध करवाती हैं जिस प्रकार का जीवन इन्होंने जीया है। इन सभी चीजों की जानकारी मुझे प्रत्यक्ष रूप से इन्होंने दी उसी प्रकार से इनकी आप-बीती का वर्णन इस अध्याय में किया जा रहा है। इन्होंने मुझे प्रत्यक्ष रूप से बताया कि-- "मैं आत्मकथा लिखने में विश्वास नही रखता परन्तु मेरे अनुभवों की छवि आप मेरी हर रचनाओं में पाएंगे और मेरा जितना भी लेखन है वो सारा-का-सारा एक किताब है जिसमे केवल ३० प्रतिशत आत्म-कथानक है।"[11]

-: विभाग:-२:-- मंज़ूर एहतेशाम का कृतित्व :-

विभाग :-२.१:-- मंज़ूर एहतेशाम की रचनाएँ:--

एहतेशाम जी की रचनाओं ले संदर्भ में कहा जाए तो इनकी रचनाओं में हताशा का भाव परिलक्षित होता है। इस विषय पर इनका यह कहना है कि-- "मैं ऐसा ही हूँ मेरा बचपन इसी तरह गुजरा है, बनती हुई इमारत का कोई कंगूरा टूट जाता है, तो आप लाख कोशिश कर उसे बनवाएँ वह दुबारा वहीं से दरक जाता है। मैंने जो जिया नही उसके बारे में मैं कैसे लिख सकता हूँ। आप जब पहली बार कॉलेज पास करके ज़िन्दगी से रु-ब-रु होते हैं तो आपको जितनी अच्छाइयाँ दिखलाई गई हैं, सबको एक-एक करके भूलना पड़ता है। अगर आप उन्हें भूलने में सक्षम नही हैं तो फिर आप सर्वाइव नही कर सकते।"[12] इनकी इस विचारधारा को हमारा यहाँ दुबारा व्यक्त करने का यह अर्थ है कि इनकी रचनाओं का पठन करके उस मर्म को समझ या आत्मसात कर सकता है तथा इन्हीं विचारधारा के आधार पर इन्होंने अपनी रचनाएँ रची हैं। जो कि इस प्रकार वर्णित हैं:--

छायाचित्र:-४

हम सर्वप्रथम इनके उपन्यासों के कृतित्व पर दृष्टि डालें तो इनका सबसे प्रथम उपन्यास 'कुछ दिन और' सन् १९७६ ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें इन्होंने एक ऐसा परिवेश स्थापित किया है जिसमें पारिवारिक स्थिति उभर कर पाठकों के सामने परिलक्षित होती है तथा इस उपन्यास को पढ़ कर इस परिलक्षित होता है कि एक परिवार में किस-किस प्रकार की परेशानियाँ जन्म लेती हैं और उस परिवार के सदस्य किस प्रकार उन सभी परेशानियों का सामना करते हैं। इस उपन्यास में इन्होंने यह बताने का प्रयास किया है की एक परिवार के सदस्य किस प्रकार यहाँ एक आशा बाँधे हुए रहते हैं की सब कब ठीक होगा और कब हमारे दिन बदलेंगे। इस पर एहतेशाम जी ने कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं-- "और रह-रहकर उसकी हर बात की टेक इसी पर टूटी होगी कि थोडे दिनों में सब ठीक हो जाएगा - बस, थोड़े ही दिनों में।"[13]

एहतेशाम जी का यह साहित्य इस कहानी पर आधारित है कि कुछ दिन और निराशा के नही आशा के भंवर में डूबते चले जाना है-- बस एक अंधी आशा जिसके पास ना कोई तर्क है ना कोई तंत्र बस वह अपने आप में ही पूर्ण रूप से स्वायत्त है। इस उपन्यास का नायक एक ऐसा नायक है जो अपनी निष्क्रियता में जकड़ा हुआ उसी की उँगली थामें चलता रहता है तथा आहिस्ता आहिस्ता ज़िन्दगी के ऊपर से इसकी पकड़ फिसलती चली जाती है तथा नायक की पत्नी इस पूरी परिस्थिति का सामना करती चली जाती है। वो कभी तो अपने मन पर और कभी अपने शरीर पर उन परिस्थितियों को झेलती है। इससे यह पता चलता है कि वह एक स्थगित जीवन जीने वाले कि पत्नी है। इस तथ्य को आकार देते हुए वह धीरे-धीरे एक अलग दिशा पाती है कि इस लगातार विलम्बित आशा से कहीं ज्यादा श्रेयष्कर एक प्रबल निराशा है जहाँ से अपने जीवन की कम-से-कम एक नई शुरुआत तो की ही जा सकती है। इसी विचारधारा को वह अपनाने का निर्णय भी कर लेती है।

इस उपन्यास की कहानी अत्यंत सामान्य परिवेश में तलाश की गई ऐसी कहानी है जो अपने आप में विशिष्ट है। इस कहानी को पढ़ने के पश्चात् ऐसा आभास होता है कि हमारे आस-पास के घरों में कोई कहानी तो जन्म नही ले रही या पल तो नही रही।

एहतेशाम जी ने इस उपन्यास के बाद एक सुप्रसिद्ध उपन्यास 'सूखा बरगद' की रचना की। इनका यह साहित्य सन् १९८६ ई. में प्रकाशित हुआ। इस रचना मे इन्होंने भारत विभाजन के दौरान आई समस्याओं को उजागर किया है कि कैसे उस दौरान भारत के समक्ष उसकी संतानों को दो भागों में बाँटा जा रहा था। एवं भारत तथा पाकिस्तान के दो देशों में विभाजित नागरिकों को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था और किस प्रकार उस दौर में लोगों ने अपनी दुर्दशा को सम्भाला तथा सुधारा था। इस उपन्यास में इन्होंने कहीं तो हिन्दू-मुस्लिम भाइयों में सद्भाव दिखाया है तो कहीं पर द्वेष।

इस रचना के पश्चात् इनके प्रसिद्ध उपन्यास 'दास्तान-ए-लापता' ने सन् १९९५ ई. में साहित्य की पृष्ठभूमि पर कदम रखा तथा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। एवं इन्होंने कुछ-कुछ स्थान पर राष्ट्र के प्रति भाव को भी व्यक्त किया है। उपन्यास के बाद इनका चौथा उपन्यास 'बशारत मंज़िल' सन् २००४ ई. में प्रकाशित हुआ। जिसमें समाज के लगभग सभी आयामों को इन्होंने समाहित किया है तथा सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक को एक अलग ही पृष्ठभूमि प्रदान की है।

इसके पश्चात् इन्होंने अपना अगला उपन्यास 'पहर ढ़लते' सन् २००७ ई. में प्रकाशित करवाया। जिसमें इन्होंने बीहड़ सर्दियों की एक रात के आहिस्ता- आहिस्ता ढलते पहर का वर्णन किया है और ऐसा लगता है कि फ़सा को इमरजेंसी के नाखूनों जैसा जकड़ रखा हो। इनकी इस रचना में ऐसा प्रतीत होता है कि शहर की आम बस्तियों से दूर एक आलीशान कोठी के अंधेरे- उजाले में हरकत करते कुछ किरदार एक शातिर जासूस की महारत के साथ ऐसे प्रतीत होते हैं कि वे कभी यथार्थ लगते हैं तो कभी फेंटेसी। इनकी इस रचना को पढ़कर सहसा मुक्तिबोध की लंबी कविता 'अंधेरे में' के चरित्र हमारी नज़रों के सामने आने लगते हैं। इन चरित्रों में नवाब, बेगम, अफसर, मंत्री व्यापारी, कव्वाल, औरतें, खादिम शोहदे, सभी पात्र समाहित हैं। जो अपनी- अपनी जिम्मेदारियों से बच निकलने की कला का अभिनय करते हुए नज़र आते हैं और एहतेशाम जी के पात्र भी इसी तरह का अभिनय मंचन प्रस्तुत करते हुए प्रतीत होते हैं।

एहतेशाम जी ने अपने इस भुतहा लेख में पाख, गुरूर, नफरत, ईर्ष्या, सूफियाना कलाम, इश्क, पछतावा, आँसू, फरेब, मक्कारी सभी के अंश समायोजित किए हैं। इस रचना में रात के एक हिस्से की कहानी के बाहर जाने कितनी रातें और दिन हैं जहां मंज़ूर एहतेशाम जी हमें ले जाते हैं और फिर वहाँ से घुमा कर वापस ले आते हैं। वर्तमान में सक्रिय भूतों की बारात के बीचो- बीच इन्होंने इस रचना में कल्पनिकता का भरपूर प्रयोग किया है। जो बहुत ही मनोरम लगता है।

इनका अंतिम उपन्यास 'मदरसा' है जो कि सन् २०११ ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में इन्होंने धार्मिक तत्व को व्यक्त किया है। जैसा कि इसके नाम से ही प्रतीत होता है ' मदरसा ' जहाँ मुस्लिम समाज की शिक्षा का आदान-प्रदान होता है एवं उर्दू भाषा की तालीम दी जाती है। ऐसे परिवेश तथा देशकाल वातावरण का वर्णन इन्होंने इस साहित्य में किया है। जो की राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है तथा वर्तमान में एक पारिवारिक कथा पर उपन्यास की रचना कर रहे हैं। जो बहुत ही जल्द हम पाठकों तक प्रकाशित होकर आने वाला है।

एहतेशाम जी के कृतित्व में उपन्यासों के पश्चात् कहानियों पर दृष्टि केंद्रित करें तो इन्होंने तीन कहानी संग्रहों की रचना की है। जिसमें सबसे पहला संग्रह ' रमजान में मौत ' सन् १९७३ ई. में प्रकाशित हुआ जो की सामाजिक सद्भाव से ओत- प्रोत है। जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं -- ' घेरा ', ' जश्न ',' छोटी - छोटी चीजें ',' अंधेरे में ' तथा ' लौटते हुए ' आदि।

इनका दूसरा कहानी संग्रह तसबीह है जिसका प्रकाशन वर्ष सन् १९९८ ई. है। इस संग्रह में कुल पंद्रह कहानियां हैं। जिसे इन्होंने तीन खंडों में विभाजित किया है इस कहानी संग्रह का प्रथम खण्ड ' सहन में ' है इस संग्रह में एहतेशाम जी ने दांपत्य जीवन की छोटी-छोटी मुश्किलें, चिंताएँ, विफलताएं, रोज की जद्दोजहद, अंधविश्वास, धार्मिक- चमत्कार और पाखंड को रुपायित किया है। इस संग्रह का दूसरा खंड 'चेहरे अजनबी' है जिसमें उन्होंने दुनियादारी, बाजारीकरण तथा राजनीति पर सीधा प्रहार किया है तथा इस संग्रह के अंतिम खंड का नाम 'फिर एक बार दिसंबर में' है इस संग्रह में इन्होंने भोपाल गैस त्रासदी से उत्पन्न प्रश्नों पर प्रकाश डाला है।

'तस्बीह' संग्रह के पश्चात् इनके तीसरे कहानी संग्रह का नाम 'तमाशा' है। जिसका प्रकाशन सन् २००१ ई. में हुआ था। इस संग्रह की कहानियों में इन्होंने सामाजिक, पारिवारिक तथा सांस्कृतिक सद्भावों का समावेश किया है। " इन सभी कहानी संग्रह ओं के साथ इन्होंने कुछ कहानियाँ और रची हैं-- ' डूबते सूरज के साथ ', ' चाँद पर आर्मस्ट्रांग ', 'गाठें ' एक लम्बी कहानी, 'कोई ना पहुँच पाया तो' आदि ये रचनाएँ अभी प्रकाशित नहीं हुई है परंतु जल्द ही यह सभी प्रकाशन के क्षेत्र से होते हुए पाठकों तक पहुंचने वाली हैं।"14

मंज़ूर एहतेशाम जी साहित्य के प्रति कितने समर्पित हैं यह तो उनकी उपर्युक्त रचनाओं से पता चलता ही है और इनके इस कथन से भी परिलक्षित होता है कि --" साहित्यकार की प्रतिबद्धता और पक्षधरता साहित्य के प्रति होनी चाहिए ना कि व्यक्ति विशेष के प्रति।" इनका मानना है कि लेखन को विचारधारा के दबाव में नहीं आना चाहिए। यद्यपि जाने अनजाने विचारधारा लेखन को प्रभावित तो करती है परंतु यह ऐसी होनी चाहिए की रचना का समय के साथ साक्षात्कार हो क्योंकि विचार शाश्वत नहीं होते। बदली हुई परिस्थितियों व समय के परिवर्तन में साहित्य भी परिवर्तित हो गया है। नित नए-नए प्रयोग नई - दृष्टियों के कारण साहित्य ने एक अलग मोड़ ले लिया है।

साहित्य की बदलती भूमिका पर टिप्पणी करते हुए एहतेशाम जी ने कहा कि-- नई तकनीकि, नई शिक्षा- प्रौद्योगिकी आदि ने हमारी तमाम जिंदगी को बदल डाला है एक लेखक इन से कटा नहीं रह सकता हमे इस बदलाव को समझना चाहिए आज परिस्थितियाँ जितनी तेजी से बदल रही है उनमें हमें नई सोच नए अनुशासन को पैदा करना होगा ताकि इस वक्त का कायदे से सामना किया जा सके।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए एवं अच्छी तरह सोच-समझकर अपने साहित्य की रचना की है आज की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए एहतेशाम जी कहते हैं कि--

" आज लिखने का काम जोखिम भरा है, एक नई इमारत बनाने के समान है, जो बिना समझे किया जाना उचित नहीं है।"15

"एहतेशाम जी रचना करते समय भारतीय लेखकों से बहुत अधिक प्रभावित हुए हैं। उन लेखकों में से मुख्यतः मुंशी प्रेमचंद, कृष्णा सोबती, फणीश्वर नाथ रेणु, टाम्स मान, दोतोस्की आदि इनके प्रिय लेखक हैं। एवं व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि पर यह महात्मा गांधी जी से प्रभावित हुए हैं।"16 गांधी जी की देश प्रेम की भावना ने इनके अंदर देश प्रेम की भावना को बहुत अधिक प्रभावित किया है और गांधी जी के द्वारा किए गए आंदोलन तथा अस्पृश्यता से भी ज्यादा प्रभावित हुए हैं।

मंज़ूर जी एस. डी. बर्मन, मेहंदी हसन, और जगजीत सिंह जी के बहुत बड़े मुरीद हैं और इसी विषय पर यह कहते हैं कि-- " किसी थ्योरी के लिए जितनी बड़ी डिश सर्विस उसके फॉलोअर्स करते हैं, उतनी कोई नहीं, चाहे वह धर्म हो, राजनीति हो, फिलॉसफी हो या साहित्यिक विचारधाराएँ।"17

"मंज़ूर एहतेशाम जी वर्तमान समय में इन दिनों 'मेरी जान इसी तोते में' है कहानी की रचना करने में मशरूफ हैं। इस कहानी की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। इसमें यह विभाजन के बाद से अभी तक के देश की राजनीतिक कहानी को एक परिवार के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसमें हमें अनेक प्रकार के विचारात्मक द्वंद चलते नजर आएंगे इस रचना में ये देश की राजनीति को एक नई दृष्टि से देखने का प्रयास कर रहे हैं। इस रचना का प्रकाशन अभी शेष है।"18

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर एहतेशाम जी की रचनाएँ अपने आप में एक समा बांधती हुई नजर आती हैं। जिनमें पाठक का खो जाने का मन करता है। इनकी हर एक रचना सद्भाव से परिपूर्ण रचना है।

विभाग :-२.२:-- मंज़ूर एहतेशाम के सम्मानित पुरस्कार:-

Receiving Bhartiye Bhasha Parishad award from
the then Governor of West Bengal, Prof. Nurul Hasan

छायाचित्र:-५

मंज़ूर एहतेशाम जी की रचनाओं ने आधुनिक युग में ऐसी छाप छोड़ी है की इनको इनकी रचनाओं के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित एवं अलंकृत किया गया है। इन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों के लिए नामचीन हस्तियों द्वारा बहुत से पुरस्कार प्राप्त किए हैं। 'सूखा बरगद' उपन्यास के लिए इन्हें 'श्रीकांत वर्मा' स्मृति सम्मान से नवाजा गया है तथा इसी रचना के लिए इन्हें पश्चिम बंगाल के राज्यपाल प्रो. नुरुल हसन जी के द्वारा कोलकाता का 'भारतीय भाषा परिषद' पुरस्कार दिया जा चुका है।

Receiving Padma Shri from the President of India,
Rashtrapati Bhawan, New Delhi

<u>**छायाचित्र:-६**</u>

एहतेशाम जी को दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने सन् २००३ ई. में राष्ट्रीय पुरस्कार 'पदमश्री' से सम्मानित किया था जो कि एक लेखक के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है।

मंज़ूर एहतेशाम जी को इनकी अन्य रचनाओं के लिए भी सम्मानित किया जा चुका है इनके प्रसिद्ध उपन्यास 'दास्तान-ए-लापता' के लिए 'वीरसिंह देव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

एहतेशाम जी को संपूर्ण रचनाओं के लेखन के लिए भी सन् १९९५ ई. में 'पहल सम्मान' से अलंकृत किया गया था जिससे इनके व्यक्तित्व की गरिमा और बढ़ गई।

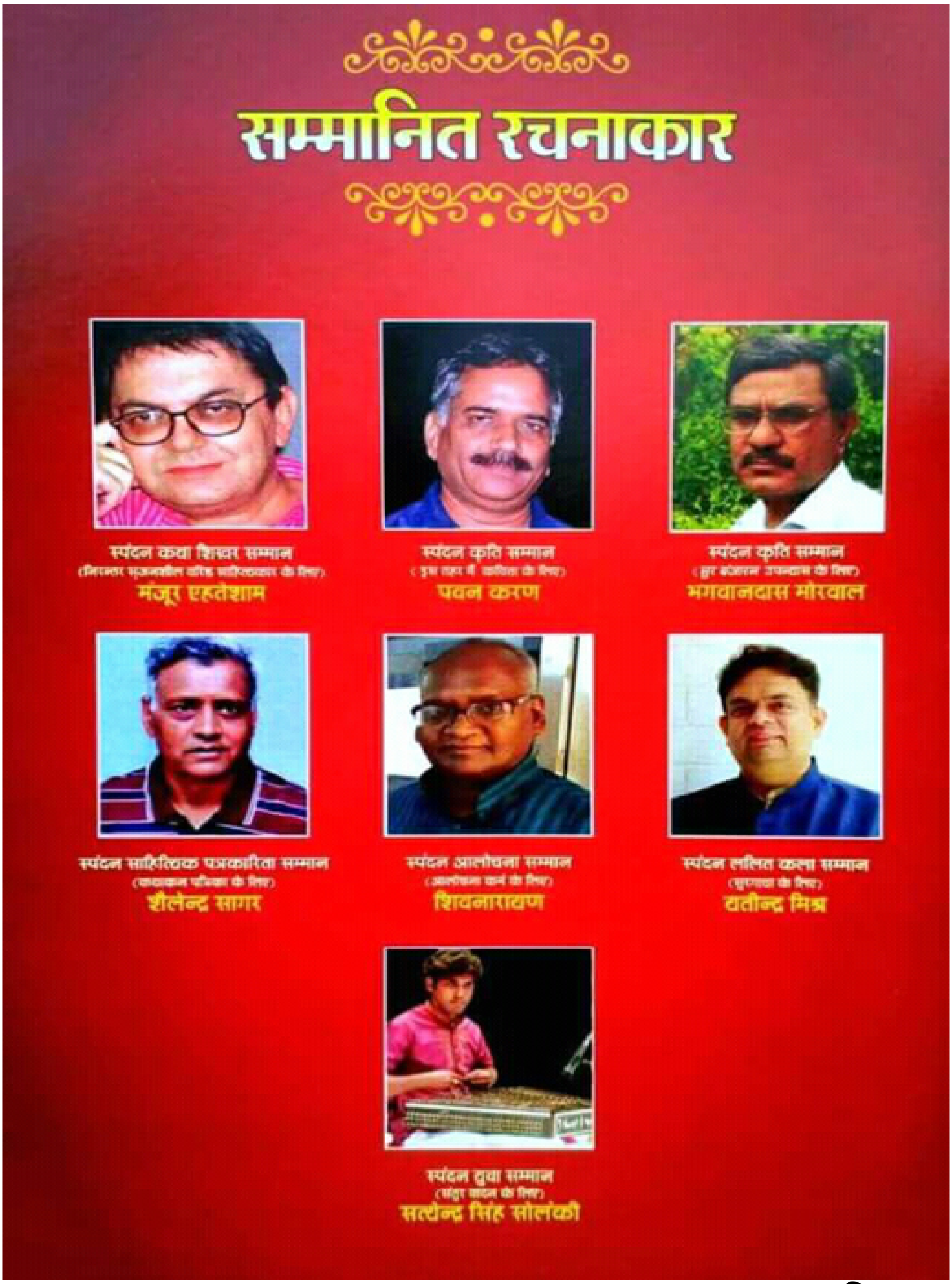

<u>छायाचित्र:-७</u>

मध्य प्रदेश राज्य के 'शिखर सम्मान' से इनको सन् २००० ई. में इनकी रचनाओं के लिए सम्मानित किया गया था तथा इनके 'तसबीह' कहानी संग्रह के लिए 'वागीश्वरी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

इन सभी पुरस्कारों के साथ-साथ भारत के राष्ट्रपति जी के द्वारा प्रसिद्ध 'सुब्रमण्यम भारती' पुरस्कार से इनको अलंकृत किया गया तथा अभी कुछ वर्ष पूर्व सन् २०१५ ई. में 'दुष्यंत कुमार' समृद्धि पुरस्कार से इन्हें नवाज़ा गया था।

उपर्युक्त पुरस्कारों के साथ-साथ एहतेशाम जी को इनके रचनात्मक लेखन की वजह से 'निराला सृजन पीठ' का पद प्रदान किया जा चुका है जो पद निराला जी के पश्चात् रचनात्मक लेखन के लिए जाना जाता है इनके इस पद पर आसीन रहने की अवधि सन् २००१ ई. से सन् २००५ ई. तक रही।

मंज़ूर एहतेशाम जी को हिंदी साहित्य पुरस्कार के लिए भी चुना जा चुका है और इतना ही नहीं अपने महाविद्यालय में ये अंग्रेजी विभाग की पत्रिका के संपादक भी रह चुके हैं। इन उपर्युक्त बातों से यह पता चलता है कि ये रचनात्मक-शैली के कितने बड़े विद्वान हैं। जिसकी वजह से इनको इतने पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत किया गया है।

विभाग :-२.३:-- मंज़ूर एहतेशाम की रचनाओं का अनुवाद:-

वैसे तो एहतेशाम जी की संपूर्ण रचनाएँ अपने आप में मुख्य स्थान रखती हैं तथा उन सभी रचनाओं को सभी भाषा-भाषी लोगों को पढ़ना चाहिए एवं उन्हें पढ़कर उन रचनाओं मैं छिपे सद्भाव को ग्रहण करना चाहिए परंतु जरूरी नहीं कि इनकी सभी रचनाएँ सभी भाषा-भाषी लोग पढ़ें तथा समझे किंतु इनकी कुछेक रचनाएँ ऐसी है जो प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ और समझकर आत्मसात भी करनी चाहिए परंतु उन्होंने अपनी रचनाओं की भाषा हिंदी रखी है जिसके कारण सभी भाषा वर्ग के व्यक्ति इनके साहित्य को पढ़कर समझने में असमर्थ हो जाते हैं। इसी वजह से कई लोगों ने जो हिंदी भाषा के जानकार हैं उन्होंने इनकी रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद किया है एवं इनकी अन्य भाषाओं में अनुवादित रचनाएँ भी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं।

एहतेशाम जी के अद्भुत कथा-साहित्य का अनुवाद अंतरराष्ट्रीय भाषाओं जैसे-- 'अंग्रेजी' तथा 'जर्मनी' में किया जा चुका है इसके साथ-साथ ही इनकी रचनाओं का अनुवाद भारत की हिंदी भाषा से इतर भाषाओं में भी किया गया है जो अपने-अपने भाषा-भाषी क्षेत्रों में बहुत महत्व रखती है।

छायाचित्र:-८

" मंज़ूर एहतेशाम जी के सुप्रसिद्ध उपन्यास सूखा बरगद का अनुवाद अंतरराष्ट्रीय भाषा 'अंग्रेजी' में कुलदीप सिंह जी द्वारा 'A Dying Banyan' नामक उपन्यास सन् २००५ में दिल्ली में किया जा चुका है। इनकी इस रचना पर अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय 'इटालियन' भाषा में गुईल्लेआ पेरिसीवल्ले (Gilles Pericivalle) द्वारा अनुवाद का कार्य चल रहा है तथा अंतरराष्ट्रीय 'जर्मन' भाषा में भी बरबारा लोट्ज़ (Barbara Lotz) द्वारा अनुवाद का कार्य किया जा रहा है।"[19]

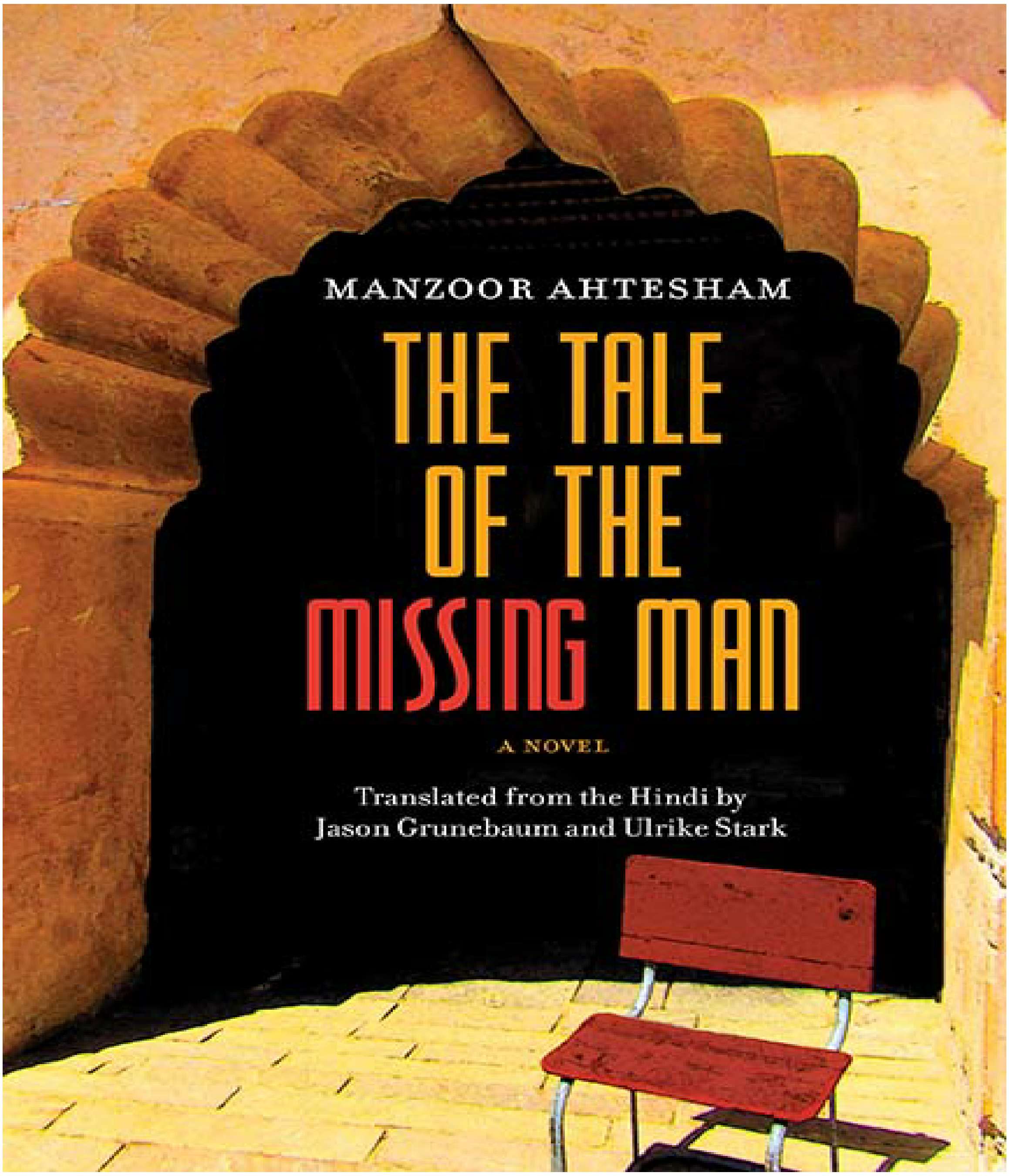

छायाचित्र:-९

" इनके उपन्यास 'दास्तान-ए-लापता' का अनुवाद अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में जॉनसन ग्रेनबान और उलरिक स्टार्क द्वारा ' The Tail of The Missing Man' सन् २००७ में न्यूयार्क में अनुवादित हो चुकी है तथा इनकी इसी रचना का अनुवाद उर्दू भाषा में भी किया जा चुका है एवं इनके इस उपन्यास पर अमेरिका के शिकागो शहर में भी अनुवाद का कार्य चल रहा है।"[20]

" उपन्यासों के पश्चात् इनकी कहानियाँ भी अनुवाद के क्षेत्र से अछूती नही रही हैं। इनकी कहानियों का अनुवाद भी अन्य भाषाओं में किया जा रहा है एवं कुछ एक कहानियों का अनुवाद किया भी जा चुका है। इनकी कहानी 'रिश्ता' अंग्रेजी भाषा में अनुवादित की जा चुकी है जिसका श्रेय श्री जय रतन जी को जाता है।"[21]

संसार में कई भाषाओं की वजह से रचनाओं को अनुवादित किया जाना आवश्यक है क्योंकि अन्य भाषा के लोगों में भी उस रचना का प्रचार-प्रसार होना अनिवार्य है। अगर कोई भी रचना केवल भाषा के एक ही धरातल या पथ पर चलायमान रहेगी तो वह रचना केवल उसी पथ के राहगीरों का पथ-प्रदर्शन करती रहेगी एवं अन्य भाषा के लोग उस रचना से अछूते रह जाएंगे और किसी भी अच्छी रचना का अनुवाद अन्य भाषाओं में भी किया जाए तो उस रचना का मूल उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा तथा उसकी मूल भाषा के पाठकों के साथ उस रचना के अनुवादित होने पर अन्य भाषा-भाषी भी उस रचना के सार को पढ़ तथा समझ सकेंगे और उस रचना के सार को अपने भाषा-भाषी लोगों तक पहुंचा सकेंगे। जिससे अन्य भाषाओं में भी उस रचना को दूर तक के धरातल पर फैलाया जा सके एवं उस रचना के मूल को अंतरराष्ट्रीय स्तर के उच्च शिखर तक पहुंचाने में आसानी हो सके।

विभाग:-२.४:- मंज़ूर एहतेशाम का अन्य क्षेत्रों में कार्य:-

मंज़ूर एहतेशाम जी की लेखन के प्रति रुचि १०-१२ वर्ष की आयु में ही बढ़ने लगी थी। इनको अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा की रचनाएँ पढ़ना बहुत अच्छा लगता है परंतु उन्होंने केवल हिंदी भाषा में ही अपनी रचनाओं को रचा है। इनसे इनके अन्य कार्य क्षेत्र के संबंध में पूछने पर यह पता चला की इनका रुझान केवल कथा-साहित्य की रचनाएँ करने में ही रहा है और यह अपने कथा साहित्य को इस प्रकार से लिखना चाहते हैं कि इनकी रचना ऐसी हो जो जन-जन तक पहुँच सके।

" उन्होंने बताया की कविताएँ लिखने का भी इन्होंने प्रयास किया था परंतु इनका उसमें मन अधिक नहीं रमा, जिस कारण से इन्होंने कविताओं की रचना नहीं की। परंतु इनकी रूचि कविताएँलिखने की ना हो पर इन्हें अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा की कविताएँपढ़ना बहुत अच्छा लगता है।"[22]

"मंज़ूर एहतेशाम जी व्यवसाई होने के साथ-साथ एक सामाजिक प्राणी भी हैं। यह समाज में रहने वाले लोगों के साथ बहुत ही व्यवहारिक रूप में नजर आते हैं। इनका व्यक्तित्व एक आदर्श व्यक्तित्व है और यह समाज में रहकर समाज में रहने वाले लोगों की अपनी क्षमता के अनुरूप सहायता भी करते हैं। जिससे इनके अंदर का दयालु भाव हमारे समक्ष प्रकट होता है।"[23]

एहतेशाम जी अपने रचनात्मक कार्य के साथ-साथ अपनी फर्नीचर के व्यवसाय को बहुत ही सफलतापूर्वक गति प्रदान कर रहे हैं। जो कि भोपाल में 'कारखाना' के नाम से प्रसिद्ध है तथा इसी के साथ ही इंटीरियर डेकोरेटर का व्यवसाय भी करते चले आ रहे हैं।

" मंज़ूर एहतेशाम जी एक ऐसी कला के धनी है जो आधुनिक युग में प्रत्यक्ष रूप से देखी-परखी स्थिति के द्वारा अपनी रचनाएँ करते हैं तथा इनको आज के सभी आधुनिक संचार माध्यमों जैसे-- व्हाट्सएप तथा फेसबुक आदि का प्रयोग करना अच्छा लगता है। इनको टेबल टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट आदि खेलना बहुत पसंद है तथा इन्हें फिल्म की टिकटें जमा करना, विदेशी मुद्रा जमा करना, पत्र लिखना एवं हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।"[24]

विभाग-२.५:-- मंज़ूर एहतेशाम की पुरस्कृत रचनाएँ:-

मंज़ूर एहतेशाम जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में अभी तक जितना लिखा वह इनके द्वारा ही बताया गया है। यह सब इन्हीं के विचार हैं जिनको हमने शब्दों के द्वारा प्रस्तुत किया है अगर किसी भी रचनाकार की विचारधारा को तथा उसके व्यक्तित्व को जानना है तो उसकी रचनाओं के द्वारा जाना जा सकता है। इसके अलावा किसी लेखक के व्यक्तित्व को जानने का इससे अधिक कोई अन्य सुगम साधन नहीं है। एहतेशाम जी कहते हैं कि इनका जितना भी लेखन है वह संपूर्ण लेखन आत्मकथात्मक है जिसमें उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं को उभारा है तथा पाठकों के समक्ष रखा है।

इन्होंने अपने जीवन में घटित घटनाओं को अपनी रचनाओं में समाहित किया है जिससे वे रचनाएँ सजीव हो उठती हैं। इन्होंने अपने परिवेश की परिस्थितियों को देखकर एवं उसको महसूस करके ही अपनी रचनाओं को लेखनीबद्ध किया है। जिसकी वजह से इनकी रचनाओं को कथा-सहित्य में एक विशेष स्थान प्राप्त है और पुरस्कारों से इनकी रचनाओं को सम्मानित भी किया गया है।

मंज़ूर एहतेशाम जी की रचना-शैली ऐसी है कि पाठक जब उसको पढ़ता है तो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह उस घटना को प्रत्यक्ष रूप से देख रहा है। इनकी रचनाओं में समाज में घट रही तथा घट चुकी घटनाओं का वर्णन मिलता है यह वर्णन ऐसा-वैसा वर्णन नहीं एक सजीव वर्णन है। जिसने पात्र ऐसे सजीव है जो अपनी परिस्थितियों का आख्यान बुनते नज़र आते हैं।

एहतेशाम जी की हर एक रचना ऐसी है जिसको जिसको पुरस्कृत किया जाना चाहिए। वो इसलिए क्योंकि इन्होंने अपनी रचनाओं में हमारे वर्तमान परिवेश की बातों को तथा समाज में व्याप्त सभी विचारात्मक भावों को समाहित किया है। एवं इनकी रचनाओं में भरपूर पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, सांप्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई तथा राष्ट्र के प्रति सद्भाव मिलते हैं। जिनमें पाठक रम जाता है और इनकी रचनाओं में खो जाता है।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में उपर्युक्त सभी सद्भावों का बहुत ही अनूठा ताल-मेल बिठा कर अपनी रचनाओं को चरम बिंदु तक पहुँचाया है। जिसकी वजह से इन रचनाओं के लिए इन्हें पुरस्कृत किया गया है। इनकी पुरस्कृत रचनाओं का वर्णन करने से पूर्व इनके संपूर्ण रचना कार्य पर एक दृष्टि डालनी अनिवार्य है।

मंज़ूर एहतेशाम जी द्वारा रचित उपन्यास:-

1:- कुछ दिन और।
2:- सूखा बरगद।

3:- दास्तान-ए-लापता।
4: बशारत मंज़िल।
5:- पहर ढलते।
6:- मदरसा।
7:- वर्तमान में एक परिवारिक कथा पर कार्यरत हैं।

मंज़ूर एहतेशाम जी द्वारा रचित कहानी संग्रह एवं कहानियाँ:-

1:- रमजान में मौत। (कहानी संग्रह)
2:- तसबीह। (कहानी संग्रह)
3:- तमाशा। (कहानी संग्रह)
4:- डूबते सूरज के साथ। (कहानी)
5:- चांद पर आर्म्सट्रांग। (कहानी)
6:- गाठें। (कहानी)
7:- कोई ना पहुँच पाया तो। (लम्बी कहानी)

मंज़ूर एहतेशाम जी द्वारा रचित नाटक :-

1:- एक था बादशाह।

मंज़ूर एहतेशाम जी की सभी रचनाएँ लोकप्रिय हैं परंतु उन सभी में से इनकी कई रचनाओं को पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है जो कि निम्नलिखित हैं:-

मंज़ूर एहतेशाम जी के 'सूखा बरगद' उपन्यास को दो पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है जिनमें से एक 'श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान' पुरस्कार है और दूसरा पुरस्कार इन्हें पश्चिम बंगाल के राज्यपाल प्रोफेसर नुरुल हसन जी के द्वारा कोलकाता का 'भारतीय भाषा परिषद' पुरस्कार दिया जा चुका है।

'सूखा बरगद' उपन्यास के लिए एहतेशाम जी को इसलिए सम्मानित किया गया क्योंकि यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें समाज में व्याप्त द्वेष, प्रेम एवं सामाजिक सद्भाव को सम्मानित किया गया है और इन्होंने विभाजन के उस मर्म को इस प्रकार व्यक्त किया है जिस प्रकार एक परिवार के बीच बंटवारा हो जाने के बाद परिवार के सदस्यों के हृदय में पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। उस दर्द और परिस्थिति को इनकी इस रचना में इनके द्वारा स्थान दिया गया है। ऐसे दर्द भरे प्रारूप की रूपरेखा वही तैयार कर सकता है जिसने उस स्थिति को खुद महसूस किया हो।

" मंज़ूर एहतेशाम जी का प्रसिद्ध उपन्यास 'दास्तान-ए-लापता' जिसका प्रकाशन सन् १९९५ ई. में हुआ था। इसके लिए इन्हें 'वीर सिंह देव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस उपन्यास के लिए यह पुरस्कार इसलिए प्रदान किया गया है क्योंकि इस साहित्य में 'सूखा बरगद' से जुड़कर ही विभाजन के मर्म को दर्शाया गया है।"[25]

उपन्यासों के साथ-साथ इनके 'तसबीह' कहानी संग्रह के लिए इन्हें 'वागीश्वरी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनके इस कहानी संग्रह के लिए यह पुरस्कार इसलिए प्रदान किया गया है क्योंकि इन्होंने इस कहानी संग्रह को तीन भागों में विभाजित किया है।

इसके प्रथम खण्ड का नाम 'सहन-में', दूसरे खण्ड का नाम 'चेहरे अजनबी' तथा तीसरे खण्ड का नाम 'फिर एक बार दिसम्बर में' है। इन सभी खण्डों में एहतेशाम जी ने दांपत्य जीवन की छोटी-छोटी मुश्किलें, चिंताएं, विफलताएं, रोज़ की जद्दोजहद, अंधविश्वास, धार्मिक चमत्कार और पाखण्ड, दुनियादारी,बाजारीकरण, राजनीति पर सीधा प्रहार एवं भोपाल गैस त्रासदी की समस्याओं को इस कहानी संग्रह में रूपायित किया है जोकि इनके अन्य कहानी संग्रह से अपनी अलग पहचान बनाए हुए है तथा इसके अलावा इनको इनके संग्रह लेखन के लिए पहल सम्मान से अलंकृत किया गया है।

निष्कर्ष:- मंज़ूर एहतेशाम जी के सम्पूर्ण जीवन को परखा जाए तो हमे अंततः यह ज्ञात होता है कि यह ऐसे व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन मे सामाजिक सद्भवना को संजोए रखा तथा अपने रचना कौशल के आधार पर इन्होंने अपने पाठकों में सद्भावनाओं के महत्व को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाहित करने का प्रयास भी किया जिसमे पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राष्ट्र के प्रति सद्भावना विद्यमान हैं तथा इनकी रचनाओं को सराहा भी गया। इनकी पारिवारिक स्थिति कमजोर होने के पश्चात् भी रचना अथवा कथा-साहित्य के क्षेत्र में इन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। मुस्लिम होते हुए इन्होंने उर्दू में काम तथा अपने साहित्य को हिंदी भाषा मे इसलिए रचा ताकि इनके उद्देश्य की पूर्ति हो सके अर्थात् इनकी रचना के मूल को हर पाठक तक पहुंचाया जा सके। इनसे मिल के मैने इनके संदर्भ में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी हासिल की और इनसे मिलकर एक अलग अनुभव प्राप्त हुआ।

-: संदर्भ सूची :-

१. अनुसंधार्थी-अंजुम आरा.आर.,१.३- टेलीविजन में एक मुलाकात,

[मैसूर विश्वविद्यालय] एम. फिल. लघु शोध प्रबंध २७-०३-२०१३

२. वहीं

३. पुस्तक - संपूर्ण कहानियाँ कवर पेज, मंज़ूर एहतेशाम, राजकमल प्रकाशन !

४. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०६-०२-२०१६

५. वही

६. वही

७. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०७-०२-२०१६

८. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०७-०२-२०१६

९. वही

१०. वही

११. वही

१२. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०८-०२-२०१६

१३. कुछ दिन और, मंज़ूर एहतेशाम, राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-१०९

१४. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०८-०२-२०१६

१५. वही

१६. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०९-०२-२०१६

१७. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०९-०२-२०१६

१८. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- ०९-०२-२०१६

१९. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- १०-०२-२०१६

२०. वही

२१. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- १०-०२-२०१६

२२. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- १०-०२-२०१६

२३. वही

२४. वही

२५. शोधार्थी की निजी वार्ता : एहतेशाम जी से, दिनांक- १०-०२-२०१६

-: छायाचित्र :-

छायाचित्र:-१:- साहित्य अकादमी पत्रिका, भारतीय अंतरराष्ट्रीय केंद्र, 19/04/2007 (Meet the Author Manzoor Ahtesham)

छायाचित्र:-२:- शोधार्थी द्वारा एहतेशाम जी संग जानकारी प्राप्त करके स्वयं निर्मित।

छायाचित्र:-३:- शोधार्थी द्वारा मंज़ूर एहतेशाम जी से मिलकर दिनांक- १०-०२-२०१६ प्रत्यक्ष रूप से खींचा गया छायाचित्र।

छायाचित्र:-४:-
https://www.google.com/search?q=manzoor+ehtesham+novels&client=ms-android-oppo&prmd=vni&sxsrf=ALeKk01RFb_xbpVTSVuvR_JGBvCeTKQIlw:1620164562845&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ved=2ahUKEwilvPup_7DwAhWHwzgGHbkGC20Q_AUoA3oECAIQAw&biw=360&bih=566&dpr=2

छायाचित्र:-५:- साहित्य अकादमी पत्रिका, भारतीय अंतरराष्ट्रीय केंद्र, 19/04/2007 (Meet the Author Manzoor Ahtesham)

छायाचित्र:-६:- साहित्य अकादमी पत्रिका, भारतीय अंतरराष्ट्रीय केंद्र, 19/04/2007 (Meet the Author Manzoor Ahtesham)

छायाचित्र:-७:- स्पंदन संस्था, भोपाल द्वारा आयोजित सम्मान समारोह।

छायाचित्र:-८:-
https://www.google.com/search?q=manzoor+ehtesham+novels
&tbm=isch&chips=q:manzoor+ehtesham+novels,online_chips:ba
nyan:w8A6JvnbW7g%3D&client=ms-android-
oppo&prmd=vni&hl=en&sa=X&ved=2ahUKEwiYjLat_7DwAhVcgUs
FHdfKCx4Q4lYoAXoECAEQBw&biw=360&bih=566

छायाचित्र:-९:-
https://www.google.com/search?q=tale+of+missing+man+novel
s+&tbm=isch&ved=2ahUKEwjW0sOxgLHwAhVIyXMBHXbmBO8Q
2
cCegQIABAC&oq=tale+of+missing+man+novels+&gs_lcp=ChJtb
2JpbGUtZ3dzLXdpei1pbWcQAzoECCMQJzoECAAQQzoCCAA6BA
gAEA06CAgAEAcQBRAeOgYIABAFEB46BAgeEApQoBJY-
npgt4EBaABwAHgAgAGXAogByDmSAQcwLjIyLjE1mAEAoAEBwA
EB&sclient=mobile-gws-wiz-img&ei=78CRYJafCMiSz7sP9syT-
A4&bih=566&biw=360&client=ms-android-oppo&prmd=vni&hl=en